

संजीवनी विद्या का विस्तार: मूर्च्छना से पुनर्जागरण तक

मानव चेतना के परिष्कार का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक ब्लूप्रिंट

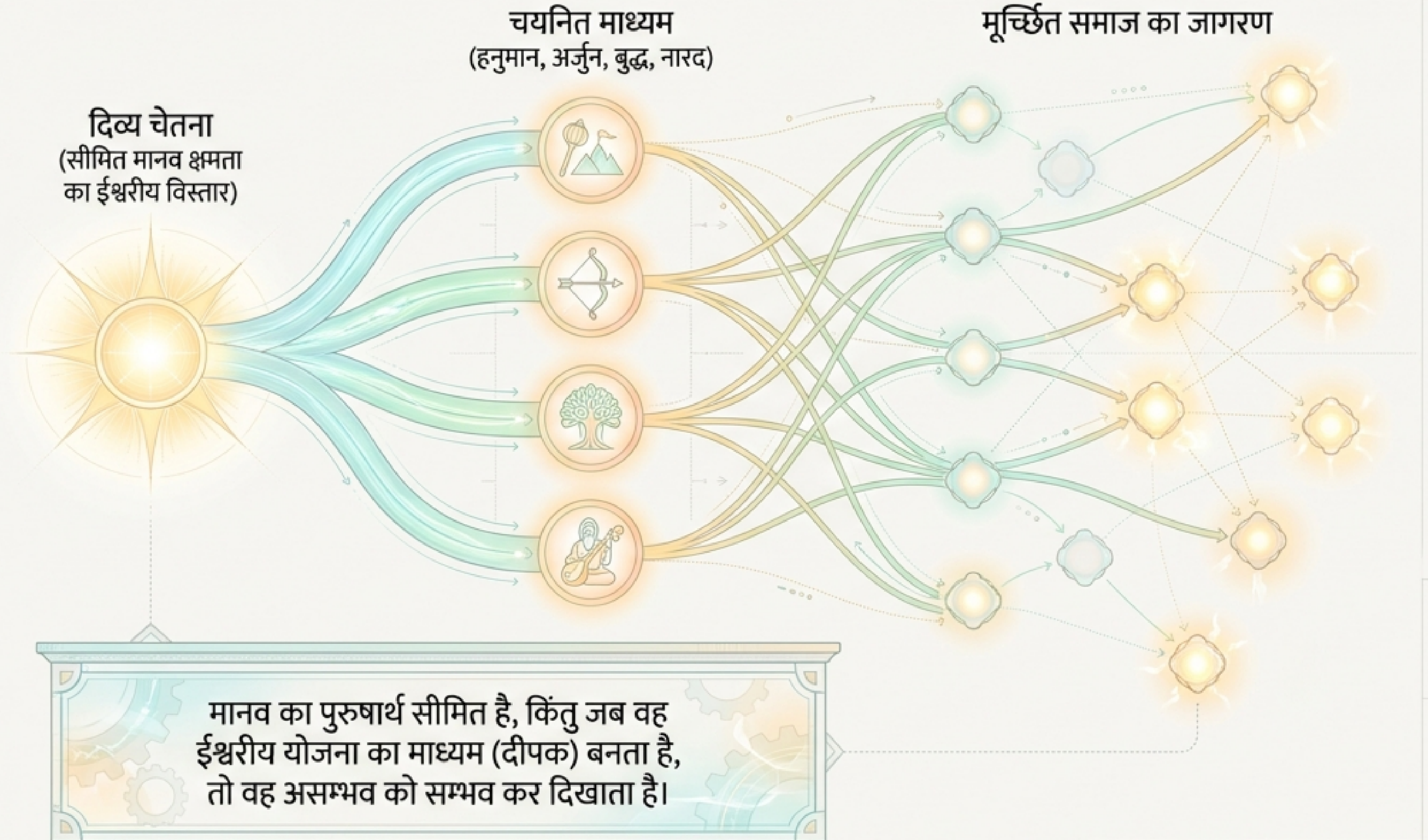


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे
कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास
करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

ऊर्जा का हस्तांतरण: जले दीपक ही बुझों को जलाएँगे

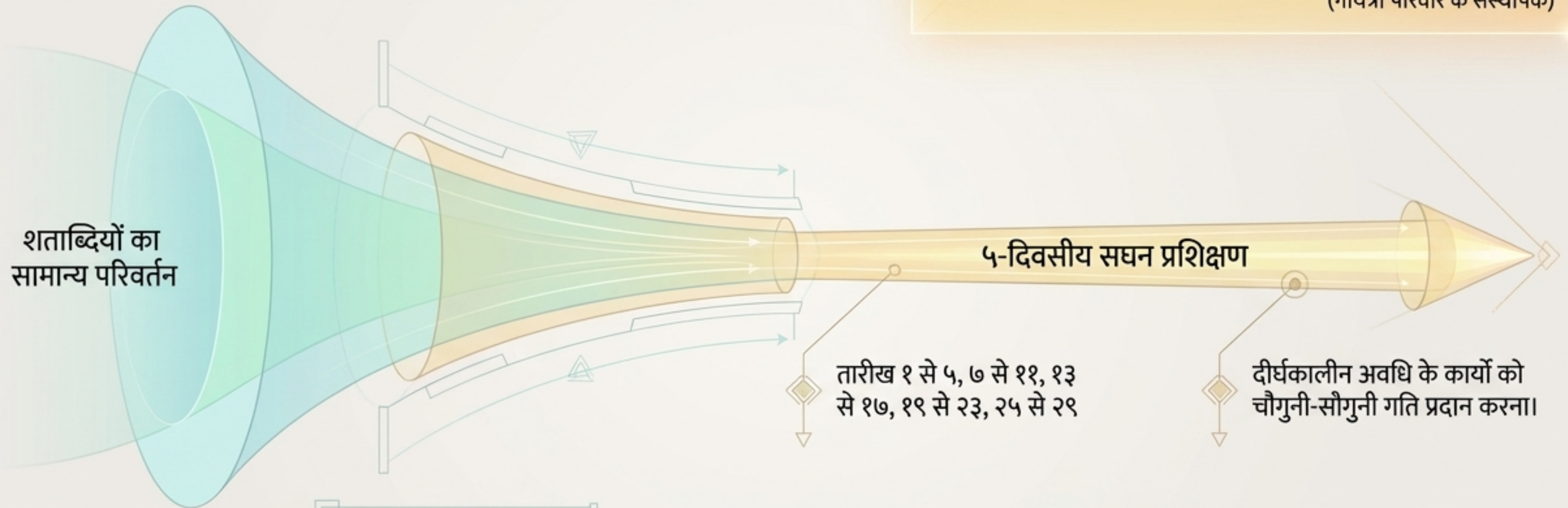


युगसन्धि महापुरश्चरणः समय और ऊर्जा का संघनन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच यें पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



राकेट स्तर की तेजी—जब सीखने और सिखाने वाले दमदार हों,
तो अल्पकाल में ही विद्या और प्राण का हस्तांतरण सम्भव है।

मूर्च्छना का पुनर्जागरण: अग्निकाण्ड के समय प्रतीक्षा का अंत



संकट: समाज में
वैचारिक अग्निकाण्ड

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे मेरे क्रान्तिधर्मी
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुत्देव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

तात्कालिक
विचार-क्रान्ति



समाधान: सीमित
किंतु तात्कालिक साधन

जब आग लगी हो, तो विशाल इमारतों (दीर्घकालीन योजनाओं) की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती।
जो भी धूल, पानी (सीमित साधन) उपलब्ध हो, उसी से हाथों-हाथ अनर्थ को रोकना पड़ता है।

विद्या बनाम साक्षरता: प्राचीन पारिस्थितिकी और आधुनिक भटकाव

प्राचीन विद्या तंत्र (Holistic Ecosystem)

- गुरुकुल, आरण्यक, परिव्राजक विश्वविद्यालय (तक्षशिला, नालन्दा)।
- लक्ष्य: देव-संस्कृति का विस्तार, समग्र जीवन कला, लोकमानस परिष्कार।

आधुनिक शिक्षा तंत्र (Modern Utilitarianism)

- व्यावसायिक स्कूल, कर्मकांडी पुरोहित।
- लक्ष्य: आजीविका/नौकरी, उदरपूर्ति, स्वार्थ-साधन, खोखला कर्मकांड।

निष्कर्ष: साक्षरता का सम्बन्ध मस्तिष्क और नौकरी से है; संजीवनी विद्या सीधे अन्तःकरण में उतरकर प्रतिभा और विवेक निखारती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदभूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

"एकला चलो रे" का विज्ञान: स्वतंत्र चिन्तन की शक्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

बुद्ध

गाँधी

भनगी

अकेला
संकल्प

नारद

दयानन्द

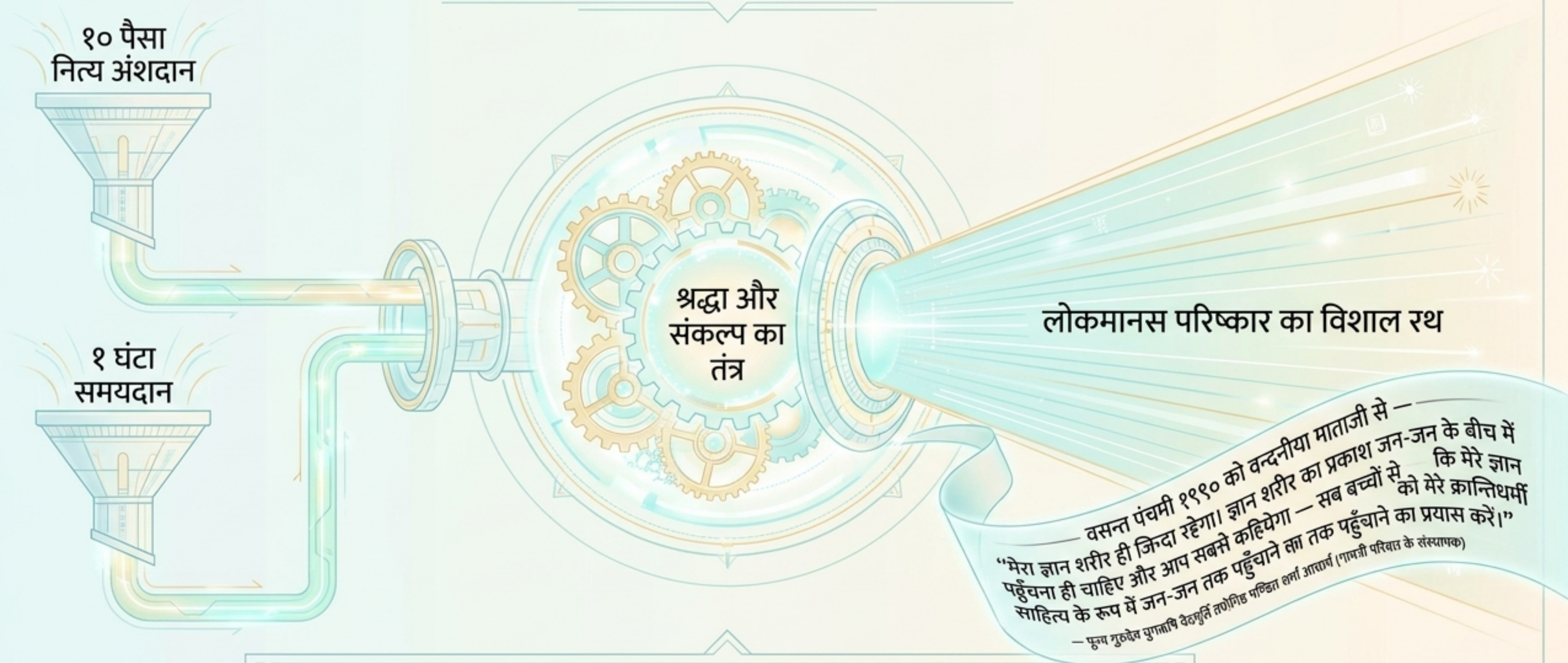
विवेकानन्द

“मेरा ज्ञान शरीर ही है। मैं जहाँ भी पहुँचना ही प्रकाश और विवेकानन्द पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य (संस्थापक)

सत्य में हजार हाथियों का बल होता है। स्वतंत्र विचारक और साधक संसाधनों की प्रतीक्षा नहीं करते; वे अपने एकाकी पुरुषार्थ और ईश्वरीय चेतना से ही प्रवाह को मोड़ देते हैं।

युग-निर्माण का अर्थशास्त्र: सूक्ष्म-अनुदानों का महा-यंत्र



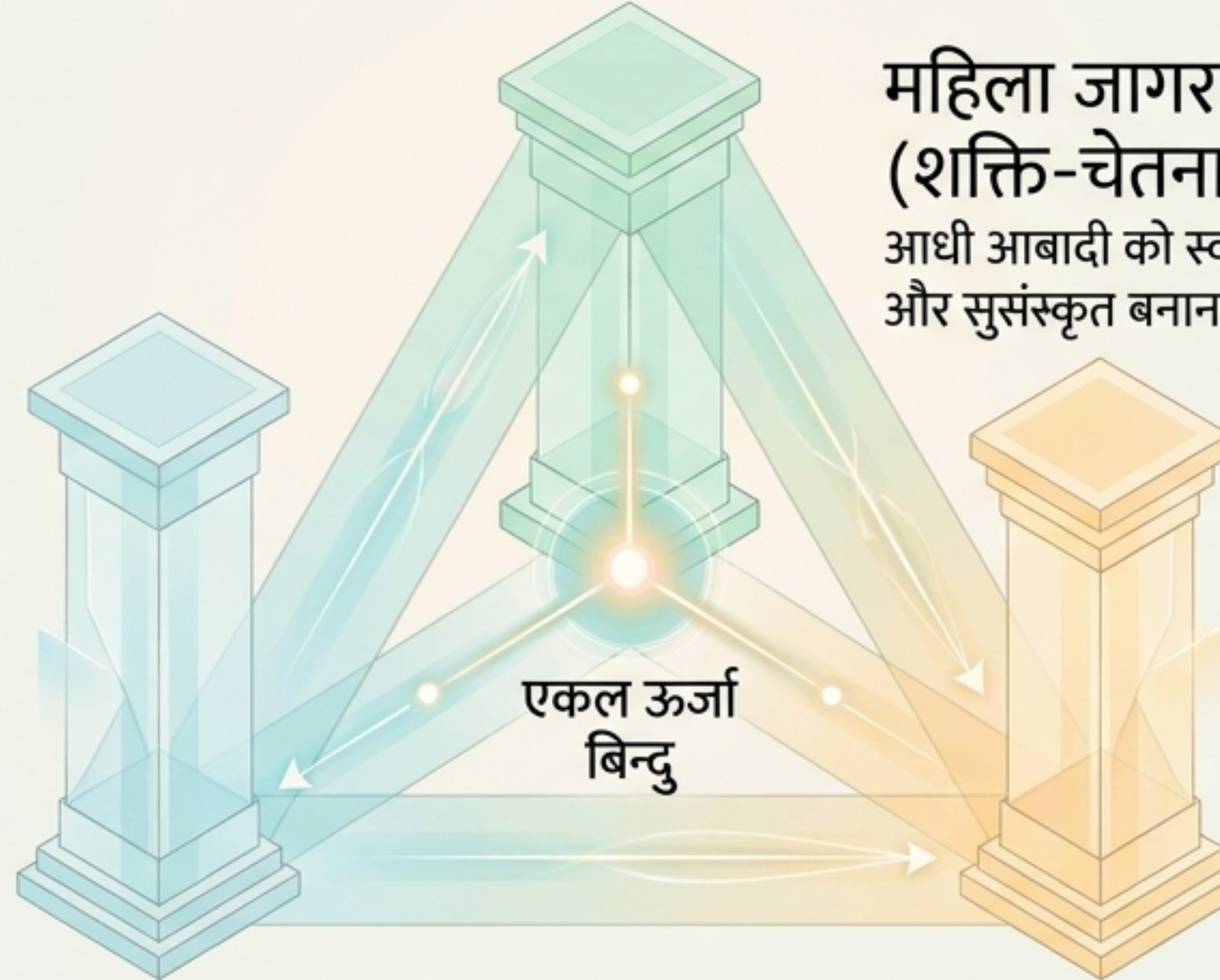
यह आन्दोलन सरकारों या धनाढ्यों के अनुग्रह पर नहीं, बल्कि लाखों जीवन्त
परिजनों की श्रद्धा-सिक्त पुष्पांजलि के स्व-पोषित मॉडल पर चलता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त १९९० से आरम्भ त्रिकोणीय प्रशिक्षण संरचना

लोकमानस परिष्कार
(कल्प-प्रक्रिया)

भाव-संवेदना
उभारने वाली शिक्षा।



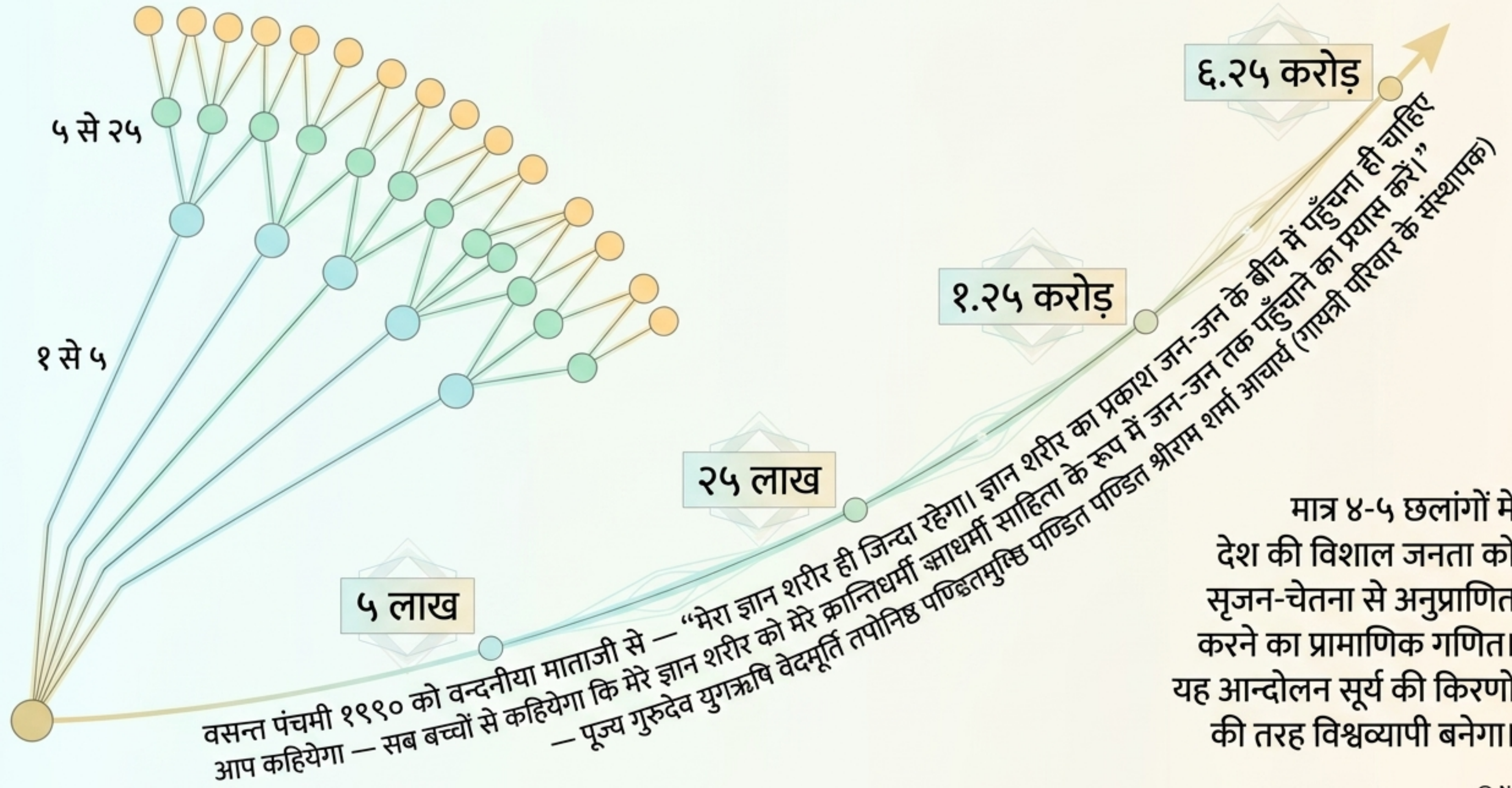
महिला जागरण
(शक्ति-चेतना)

आधी आबादी को स्वावलम्बी
और सुसंस्कृत बनाना।

प्राण-चेतना उद्दीपन
(ब्रह्मवर्चस् शोध)

मानवीय अन्तराल की ऊर्जा का
साधनात्मक अन्वेषण।

एक से पाँच का आन्दोलन: चेतना का घातांकीय (Exponential) विस्तार



पंच-दिवसीय साधना का विज्ञान: सूक्ष्म अन्तराल तक प्रवेश

यह मात्र शब्द-शृंखला नहीं है;
यह ऋषि-कल्प मनीषी की ऊर्जा है
जो सीधे मर्म-स्थल पर प्रहार कर
आदर्शवादी उमंगों को जन्म देती है।

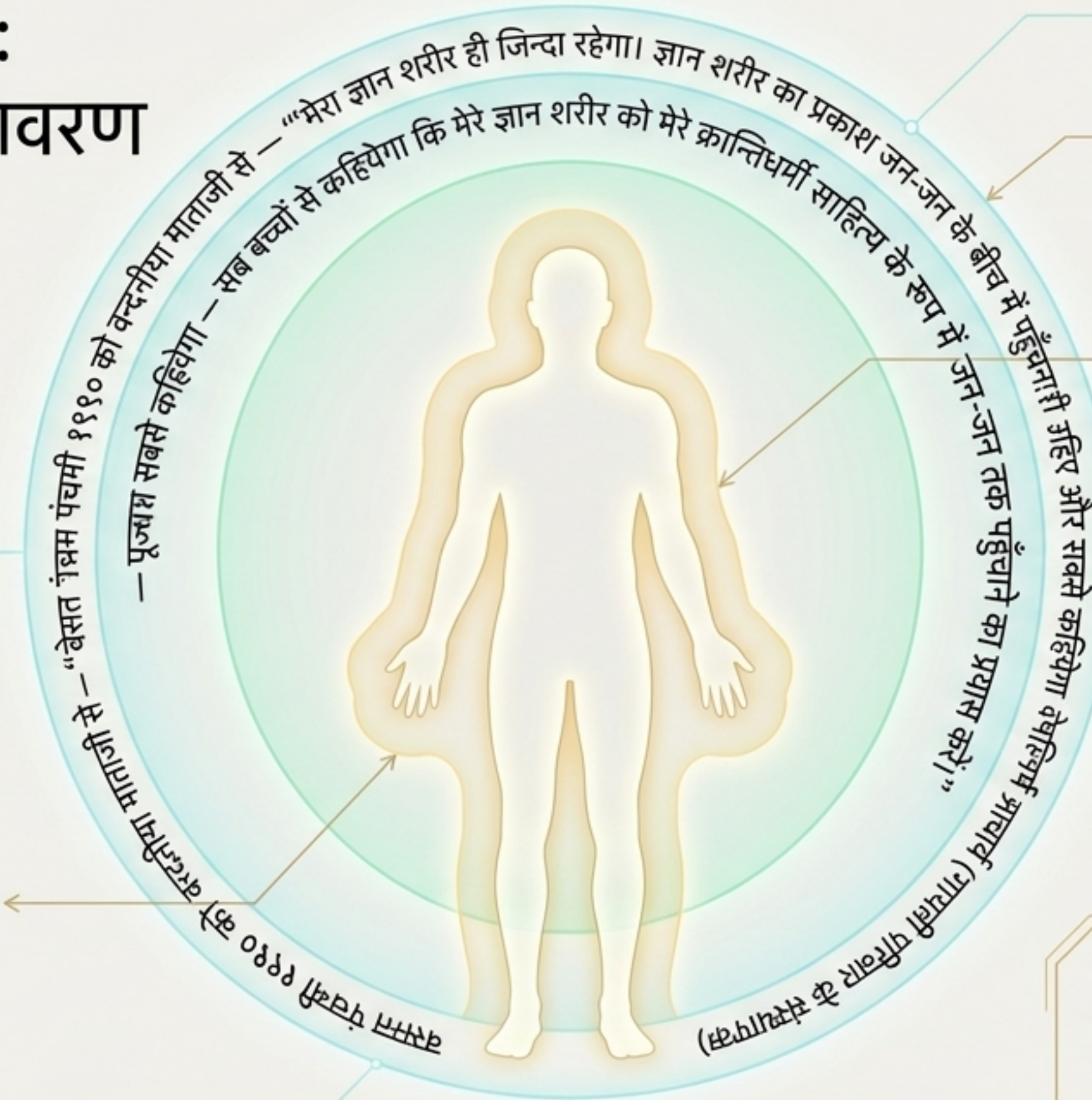
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



चेतना की एनाटॉमी: व्यक्तित्व के तीन आवरण

स्थूल शरीर (Gross Body):
भौतिक क्रिया-कलाप पर
और व्यवहार का क्षेत्र।



कारण शरीर (Causal Body):
अन्तराल की सबसे गहरी परत,
आत्मा और प्राण-चेतना का मूल केंद्र।

सूक्ष्म शरीर (Subtle Body):
विचारों, बौद्धिक जानकारीयों और
भावनाओं का क्षेत्र।

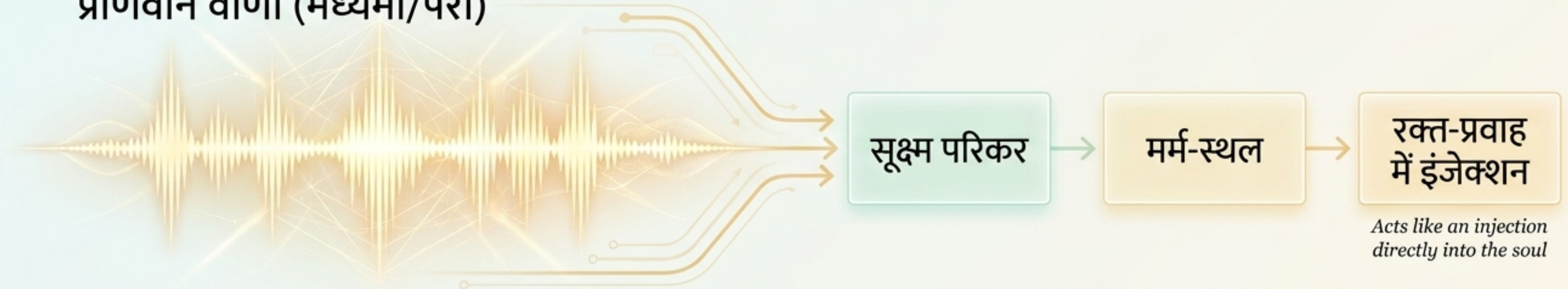
सामान्य शिक्षा केवल सूक्ष्म शरीर तक
पहुँचती है, जबकि संजीवनी साधना कारण
शरीर को भेदकर स्थायी परिवर्तन लाती है।

आध्यात्मिक वाक् का भौतिकी: वैखरी से परा तक

सामान्य वाणी (वैखरी)

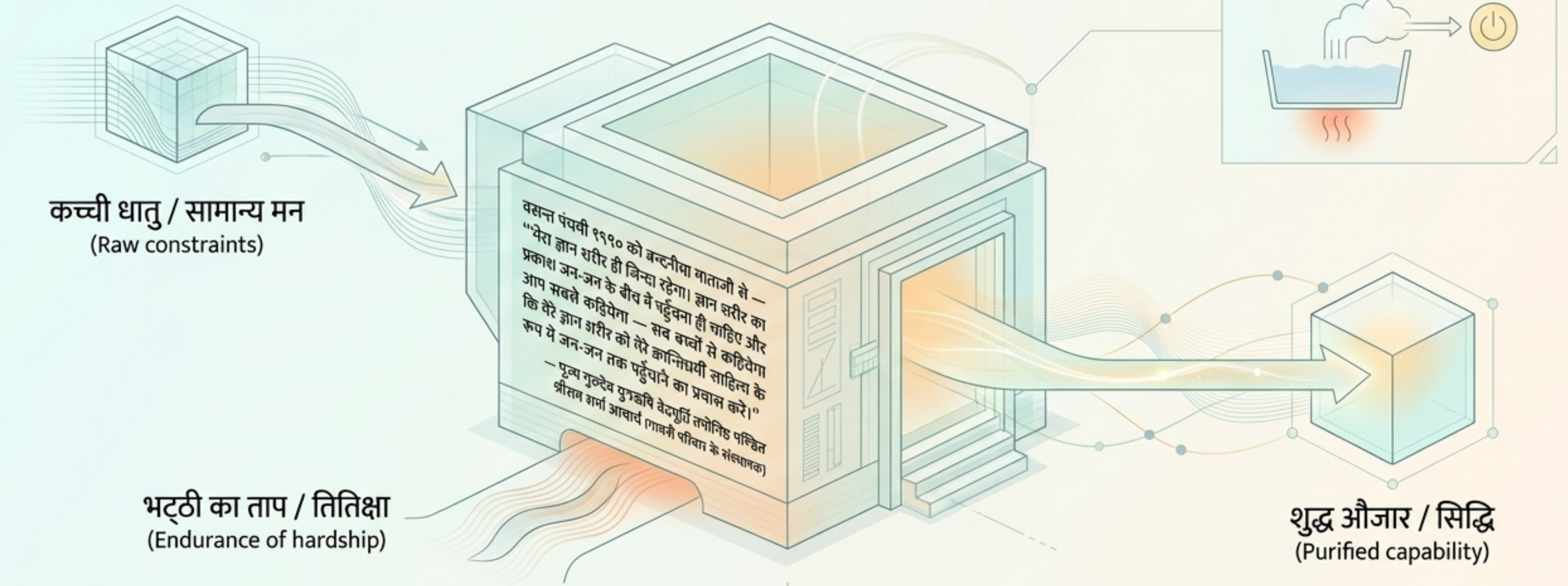


प्राणवान वाणी (मध्यमा/परा)



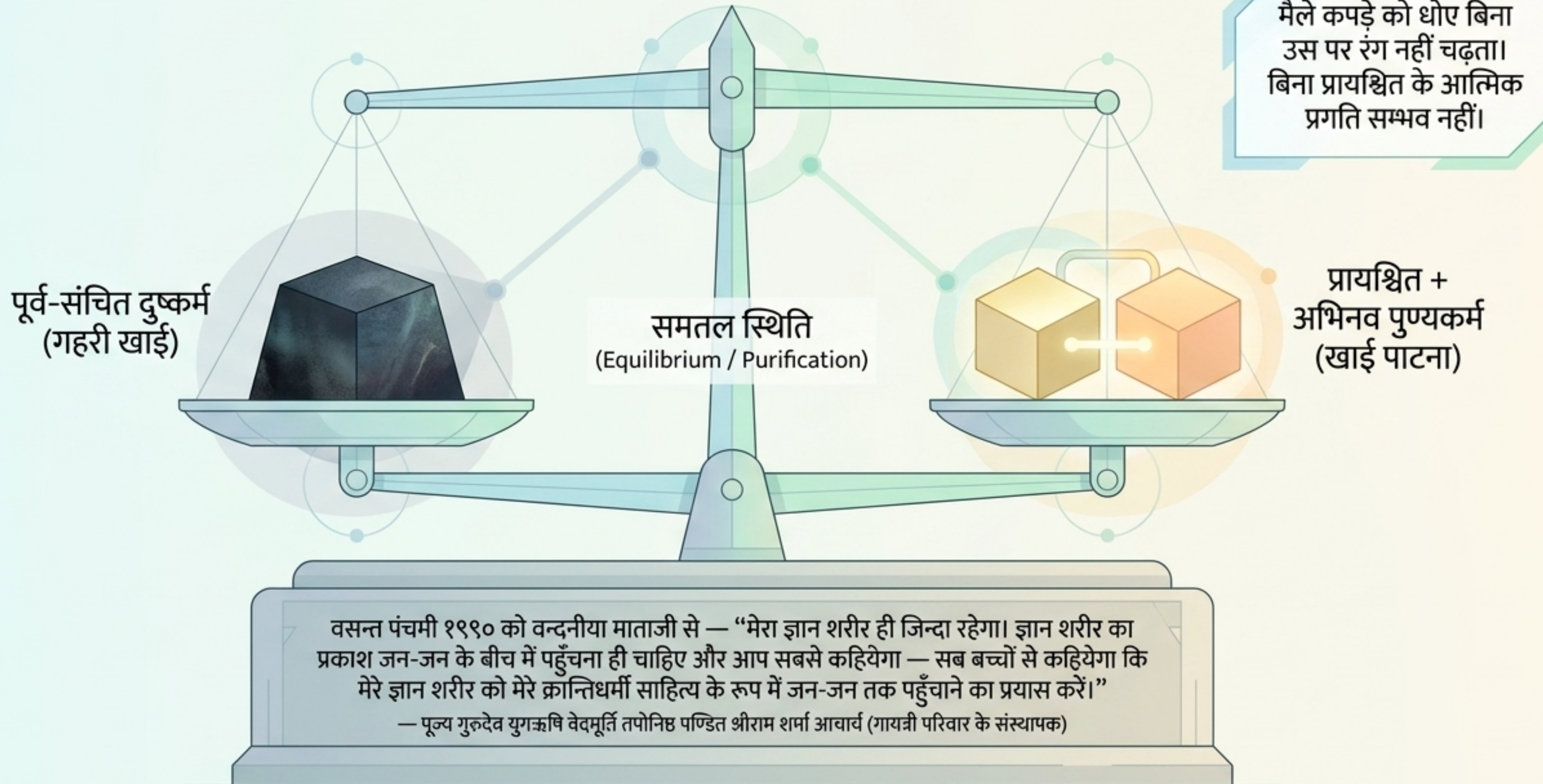
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

तप और तितिक्षा का थर्मोडायनामिक्स (ऊर्जा-विज्ञान)



आदर्शों के परिपालन में प्रसन्नतापूर्वक कष्ट सहना तितिक्षा है।
बिना ताप (ऊर्जा) के कोई भी धातु (मनुष्य) अपनी श्रेष्ठता प्रकट नहीं कर सकता।

कर्म-परिमार्जन का alchemical समीकरण



अनुग्रह की पारिस्थितिकी (Ecosystem of Grace): स्वाति-वर्षा का रहस्य



जैसे स्वाति नक्षत्र की बूँद सीप में पड़कर मोती, और बाँस में पड़कर वंशलोचन बनती है;
वैसे ही इस सिद्ध भूमि का सान्निध्य सामान्य जन को नवयुग के शिल्पियों (देवमानव) में ढाल देता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)